

ॐ नमो श्रीगुरुभ्यो नमः ॥ अत्र ललित कर्माह ॥ दिकोदधि निरुलसा ब्रह्म पूजा दयकं याय डिता ॥ यत्र कं
 रुज कदय कं याय डिता ॥ ब्रह्म मधुल दय काठा अरिष क विलसा क्रापां अरुं मवस सिध पूजा जालं पटका गिनियव
 कम् आदि अरु वाहि कम सुगुन मरु यत्र गाव वरु यष्ट मकूट खड्ग याभ कर्त्तु याव थुमि स्या येनायास्यं ॥ लिवा
 य ॥ पूजा रुलजय ॥ गुन मधुल समाधियास्यं कर्म थं पूजा याय ॥ दव पूजा समं धून काठा वलि विद्य ॥ थम मरु कां धू
 न काठा ॥ लाथ खड्ग याय ॥ क्रमायं या नाठा ॥ थ कालिन पूजा रुल जान कं पिहा यायाडा ॥ आश्रम सयास्यं ॥ निष्क सया
 गुन मधुल रुगुलियाय ॥ ॥ थन सिध यनिल स्वय ॥ धल नदन क ॥ मरु पूजा ॥ मधुल धय ॥ लावना निलाजनः

लाहामित्रका ॥ यवगवविश ॥ ॥ थनमशुलवायक ॥ पूजायाय ॥ दकनादं २ ॥ काय ॥ गुणानुदाहल्य ॥ वाक् ॥ उं वरु
 त्रंयादि ॥ ॥ यादार्घ्याय ॥ वाक् ॥ उं जीपवत्रसस्का वायसुगुनूवत्रगपस्का नायथीवजा वार्थाय विकवत्रगकमलाय
 अर्घ्यपुनिद्वस्वाहा ॥ संखराय ॥ पूजा ॥ किकन ॥ संखनिक्षनाय ॥ ॥ गुनूयाकपादपूजा ॥ दकनादं २ ॥ किकिंकाय
 गुनूयाक किकन ॥ उं आं हूं श्रीमन्वज्रसत्त्वयादि ॥ गुनूअनियाय ॥ साजानस्वानविय ॥ ॥ थनस्वसिन्ध्यायाडा
 क्रमि २ ॥ आसंखदिलासं थडा २ ॥ धमसंकरय ॥ मशुलवाय ॥ स्वनक्रसहालवायक ॥ यवपहात्रपूजा ॥ ॥ थनख
 कन ॥ अयलमिदं कन विरुं क्वाग्वाधिवजनवृद्धा नांयथादर्थमहामहममापीमाननाथयखवजायददाहिम ॥

हनाथ ॥ ॥ कंसिखनरुसांगुनूयाकपाथनायानाज्ञायायानथगकयनिम्यनवृद्धयूयसुगथअक्रियकविल आआथ
 निजिय ॥ ॥ क्वायाययाकात्रनंथनिद्वेलथील्यनिम्यनंजियनिम अक्रियकविमं विष्ठायमाल ॥ ॥ थनवजनम
 गलसथिय ॥ उं वज्रसत्त्वगथगकदयंदयार्कदयंवसमवहिरं निरियंत्रस्वत्रुयान ॥ ॥ हसिष्यपनिद्वयनिम्यनदहनगथ
 अलसा आआथनिद्वमिन्गलस श्रीवज्रसत्त्वगथगकमहात्रसन विष्ठाक कानअलसाद्वेयनिम्यथनयाखसूयानंमकनसा
 द्वयनिम्यत्रकायायधकं विष्ठाकं ॥ ॥ थनयाखसूयानं कनमकडाथनयाखसूयानं गवक्रसंअनगमाथनं कलवलयानाडा
 धनदय ॥ ॥ यादिवियाडाहनिडा अथनंथनयाखसूयानं कनमकडा ॥ ॥ थनयाखसूयानं गवक्रयानं कनसा आमद्वमिन्गल

सविष्ठाककशीवजसत्त्वकथगननेकमिन्नगलवर्हायाअपिहाविष्ठापिअरुल॥थनयाखगुफयानाअरुलसाक्यनि
 रुत्रकायायधकविष्ठाकं॥ ॥पुनश्चयवना॥अथप्रवृत्ताहंवजपाधिर्यादहनक्याह॥ॐदंमकुन्तंयावरुः
 वं॥गुननंआहादयकलंरुसिखापनिआओहमिस्यनरुनगन्धधलसाथीगुनवजपातिरुयोअआहादयकागु
 खथनिद्रुपनिम्यननकविरुयानाअरुनधकंगुननआहादयकलं॥ ॥गुनववं॥नवलयाहंमवमहयाः
 मांरुवमांयनिहावधकालरुयाकलानत्रकंयस्योरु॥हसिखापनिद्रुमिसनरुनधकंआओहपनिम्यनसिय
 गन्धधलसादवगुनमामथवीवयिसंकल्यंनिद्रुनायोयमरुडा॥थयनिद्रुनिद्रुनायाकसासहाभधात्रपायया

१ थं

अग्निनदहलयाअरुमयानाअनत्रकसकूटिकलकायाअनामयापिअरुल॥अमांन्यमयासांन्यरावयानाअनामयानाकार्य
 मिधरुयाअकामुनोत्वंयत्रिपूर्वरुयिअरुल॥ ॥थनरावनामय॥उंवजसालिधिकादरुदलकमनायत्रिवन्दसूर्यपः
 विम्यसिखावजधत्रयंतिरावा॥ ॥माकर्षन॥उंवजाकुसजःत्यादि॥ ॥सिखावर्व॥वाधिवजनेवृद्धानांयथदरु
 ममासहममापिमाननार्थयखवजायददाहिम॥हनाथरुगुनथनिद्रियनिम्यनप्रार्थनायानाकापायागन्धगनयनिम्यगन्धवृद्धय
 रुपनिद्रुगन्धअतिखकविलअर्थंअर्थंआओहियनिद्रुकायाययाकाननंमअतिखकविम्यंविष्ठाकनधकसिखनंगुनयाः
 कप्रार्थनायाकं॥ ॥थनकेगहियक॥सिखयासिलसगस्यंवाक्य॥उंनरुथगनेप्रहासमायनेमहावागेनद्रुविरेय

वेदावतनद्वारा कथयिष्य ॥ वज्रमायननिर्जयः नदवेदवीयश्चमुखनपुवमिहं सिख्यंममिति शुभं ताकृवं हं वज्रां कद्विह ३४ सपुस्त
 कायस्वतावंसस्वन्नयं हानसत्वातिकमधिमूढा पुनरुज्जमखादिमूर्तिरिति ३ पञ्चानिष्टस्य गगनमापूर्यस्ते ज्ञेयानादिविद्यासहिते
 कुरुञ्जपुताकावस्तुवामनादिगीगन्तव्यकूकमादिकथयिष्यी कत्रकिसलयावजिनवाधिविक्रामपूर्यसितकलगेमसिधायः
 शान्तिमूर्तमसिधिवमानं शान्तिगीगनमगलगीनं ॥ ॥ यनलाभिसदयकं कालस्यं विय ॥ वाक्यं यन्मगलं सकलमन्त्र
 दिसिक्तस्य सर्वात्मकस्य वनधर्मकूलाधियस्य निस्यखमन्त्रजनकस्य महासखस्वकन्मगलं कवकुगपत्रसाक्षिधक ॥ ॥
 अतिधकं महावज्रं मेधकुकं नमस्कृतं ददामि सर्ववृद्धानां त्रिगुणकालयसंरुव ॥ हसिष्ययनिश्च अतिधकं कुरुयुगार्थिं गुणलसा

३

१ लक्ष्मीधवकाकनपुर्वगतं क्लिष्टाकनार्थं क्लिष्टमलप्रहितं वृद्धाविवृद्धगुणयुक्तं नमः तस्य गलं कवकु भक्तिकत्रनवाद्य ॥ २ ॥ कन्यापदिसु पुवत्रस्तु कथ्यः स्वोक्तिलोकाकननदवयुर्ध्वं धर्मात्मनः
 भक्तिकत्रपुजातां तस्य गलं कवकु भक्तिकत्रनवाद्य ॥ २ ॥ सधर्मयुक्तः भक्तमगलाय संधानिदेवास्तु नदकिनियः यः श्रीनिवासः प्रवशागतानां तस्य गलं कवकु भक्तिकत्रनवाद्य ॥ ३ ॥ २

यं ववृद्धया हानं उक्त्य किरुया आधानगु वज्रं समानं कडाधना आधानगु हनं स्वर्गमश्वा पातालनं नमस्कात्र या ना कया गु थर्थिं गुक
 साक्षिधकथ निजिनं कथय निस्तु विद्याधखसयार्क कनमरुता ॥ कनसावृषस्वन्नय रुया आरुभमरुस्यं नवुकमडा निडा ॥ मयार्कं मक
 नसा अमरुत्सवृष रुया अकथय निस्तु वक्रायायुडा ॥ ॥ यनमं घनखनहाय ॥ अतिधकं महावज्रं मेधकुकं नमस्कृतं ददामि
 सर्ववृद्धानां त्रिगुणकालयसंरुव ॥ उं वजादकाक्षिधकमन्त्रकलमहं ॥ ॥ पुनश्च खनावाधिवजनवृद्धानां यथादकां समा
 महममापि नानार्थयखवजाय ददाहिम ॥ हनाथहगुनु आ आथ निजिय निस्तु वक्रायाय या का वनस क्रायाया गुधक
 वक्रथा गय निसंग थसकलमन्त्र उद्धान्याय या निमिर्लिगथवाधिसत्वय निस्तु अतिधकं विल थ निजिय निस्तु अ

अंशु निषक विषय विष्काहन ॥ ॥ थन पाकु मादसकस्य ॥ वाक ॥ उं ऊ ॥ हं का वाधि सिद्धिं वज्र जात्रा काय ॥ हृदि जत्र स्मानां कक्षा
 नमस्ते कीरुर्गं दिष्टा संयुक्त ॥ ॥ थन खडा लाहा नरुया आया ३ विय ॥ वाक ॥ उं महा मुख वज्र सत्वा निषिक्क मि सर्व कथा ग
 का धिय निवृत्त दृष्टा नव ॥ मिखा पिसं मान ॥ ॥ थन संख संख नहाय ॥ उं अरिषकं महा वज्रं के धारु कं नमस्कृतं ददो मि सर्व
 वृद्धा ना विगुष्कालय मस्तव ॥ ह मिष्य यनि आ म अरिषक इयुग थिं गुष्काल सा स्वकारु दन उत्य कि इया आवान गु महाया
 नया गुष्कं जायल पा आ मा करुल विया आवान गु महाया कया अविषक जिन कृप निरु विषधुन थन ख मया नं कन मरुडा कनः
 सा नव कया अग्नि स्वयं इया आ कस्मया युडा महा गुफया नाडा नल सा अमरु लव्य इया आ वक्राया युडा ॥ ॥ थन गुन पक्

२ ह मिष्य यनि मकुट इयुग थिं गुष्काल सा मस्तव कथा गनया कृत्वा आवान गु कि लवनं नमस्कृतं ना नया गु आडा कृप निपक्क कथा
 गनया कृत्वा सज्जम इल २
 पहात्र युजा ॥ ॥ पुन गावना कय ॥ गिया आ वल मस्तव वृपं हान सत्त्व न कीरुर्गं नरुल कथा गनं वरिषिक्क मानं गावयन् ॥
 ॥ थन मकुटा निषक विय ॥ उं अरिषकं महा वज्रं के धारु कं नमस्कृतं युष्मा यं पुजना थय मकुट यक् कुला रुव ॥ ॥
 थन मकुट हिलक ॥ उं वज्र भलं अवि अरिषिक्क ॥ उं वज्र वजी नि अरिषिक्क ॥ उं वल वजि नि अरिषिक्क ॥ उं धर्म वजि नि
 अरिषिक्क ॥ उं कर्म वजि नि अरिषिक्क ॥ ॥ थन मकुट नपुय कं कय ॥ ॥ हनं संख लघन हाय ॥ उं वज्र मकुटा निषिक्क
 मृत्र नमहं ॥ उं वज्र रुख हा ॥ ॥ मकुटा निषक ॥ ॥ वाधिवे नया दि ॥ ॥ ख कन ॥ ॥ गावना ॥ ॥ सिष्य को पद्य पे नि सुता सि
 स्वरा वा न्म कं हान सत्त्व हि नव जाया र्या मितां रा त्सकं विविन्त्य ॥ ॥ थन वज्र न कथू कपानू ग थिय का आ विय ॥ वाक ॥ उं अशा

तिष्ठिकत्वं समिवृद्धवशातिष्ठिकम् ॥ ॐ दं न सर्ववृद्धानां गुरुवत्सुमिद्वयवृद्धयश्च तिष्ठिकसुवृद्धमहं ॥ ॥ अनन्यवृद्ध
 मयसुसुकोननहिरुषुवनवृद्धानववृद्धत्वं न सत् नवजिवकः निवृत्तपुन्यमाकनुभतिनसुनादयाधिय ॥ ॥ धर्मादयावाधयं कुं ध
 म्मादयाननकं ॥ ॥ हसिधयनिर्भमवृद्धयधुयुगथिगुलाधकधालसाकडाधनधर्मनउत्पलिरुयाडावाङ्गु अतिष्ठिके
 सियमइधर्मस ॥ ॥ वृद्धिमयवृद्धयासुमावमयुहनं सत्वं मयु स्वाकं मयु मिकं मयु आकावकायाकायमजिडा निवृत्तपुन्यमा
 रुयाडावानगु हानककलायडियाडावानगु धर्मादयाथं पुन्यरुयाडावानवृद्धकलयाहानधयागु थथिगुधकसिद्धन
 ॥ ॥ वाधिवजनवृद्धानां यथादलासमा महु स मायिनां न नाथयखवजायददाहिम ॥ ॥ हनाथहगुवृद्धानायायकथगक

यनिम्यनगथवृद्धयुनयनिम्य अतिष्ठिकविलअर्थं जियनिवृद्धानायायकावननसमहाकडाधनावागुनामातिष्ठिकवित्यं धि
 फाहने ॥ ॥ लावना ॥ ॥ कदनुहं कावचकसंरुनवेवावनेविहाय ॥ ॥ सिधं हानमत्वातिन्नमिन्नसिक्कयधुधत्ता ॥ ॥
 थनमिष्यायाकथु कपालसवृद्धयधुनथियक ॥ ॥ सेखलखनहाय ॥ ॥ यं वगधनतिवर्कनामदुय ॥ ॥ उवजकिलकहृषननामः
 रुहवस्व ॥ ॥ नरुतिष्ठिके क्रियायया मरुथाग यवध वाख्यानमरु साधन पुधाधिरुमाकवनि ॥ ॥ हसिधयनिमाला
 उदका मरुटा वृद्धयधुनामातिष्ठिकलास्यनि आडाकपनिम्यनलास्यलि आडाकमिमानयायगुकर्मरु धुधालसा नि
 लकर्मदक मरुथाग वाख्यानहनस्वयदेन रुयनिम्यजागहलधकगुन आहादयकलं ॥ ॥ ॥ सिधवववावजावाया

शिषकं कामहं दहि कृपा नश्च स्वयदार्थं समस्तया यत्रा वाहं लुक् पुष्पदन्त ॥ हनाथ ह गुनू हनं क्राया कथं गतं यनि संयुक्तं पुष्पदन्तं ॥
 शिषक विल अर्थं जिप निव क्राया यया का वनं हनं आ वा र्या शिषक विसं वि का हनं ॥ ह गुनू क्राया का वनं आलसा जिप नि स्य न हन
 स्य न दय कया का वनं मन स वा क्राया नाध कं गुनू या क पार्थ नाया ना ॥ ॥ का वना ॥ श्री गुनू ना पि व ज स ल वृ पं वि ता व ॥ सिष्य
 सर्वा त्र का व रु धि गं कुरु ध्वज पुना का दि लं क र मिं हा मन स वि वि ता ॥ द ल क म ला त्र वि व ज स ल ना व व ॥ ॥ थ न म कूट ३
 न पु य क ॥ उं सर्व क थ ग र स हा म कूटं पु नि कृ स्वा हा ॥ ॥ थ न व ज वि य ॥ उं न द नू क्रा व जं ध्वा ला ॥ ॥ व क न ॥ आ ना दिः
 नि ध न य दं व ज स ल म हा व रः स म क र द सर्वा सा व ज ह न प्र नि य नि ॥ ह सि ष्य य नि आ म व ज ह यु ग थिं गु धा ल सा धा हा म इ ध

नथं श्री व ज स ल य व र म य म हा व र स न का रु क आ ना उ वि का क गु स म क र द या आ ला थं व ज ग र ह या वा जा थं ह या उ आ नं ॥
 नि व जा शि ष क ॥ ॥ थ न यं गु वि य ॥ न द नू आ का व जं ध ॥ ॥ यं सा सर्व वृ द्धानां ध ध्या या न वा स्म ता ल या पि हि स दा ध र्या वाः
 धि रा य जि नि मि ता ॥ ह सि ष्य य नि आ य वृ ह यु ग थिं गु धा ल सा आ म य ध्वा ना या स व न सं सा त्र कि र व न कं भा ह ह या उ आ न गु थ य
 धं कृ प नि स वि य ध न कृ य नि स क्रा रु क ध ल व पा उ नि ध कं गु नू न आ हा द य क लं ॥ ॥ थ न व ज यं ध्वा न कं आ लिं ग न मू डा
 या न क ॥ ॥ व रु ना नि वि ध र्म संध स ह सा द स ना दि दा व र थ ग ना नि धि वि जा ज ना य ॥ न द नू मू डा स मा प्रा क म ना मू कि द दः
 ल म स र्व मू कि द दार्थ न क न मू डा पु कि र्ति ना पु क्षा पा य म हा स कि अं स वृ द्ध म हा सू ख ॥ ह सि ष्य य नि आ म मू डा या पु ता व ह यु ग थिं गु

पुमान्भक्तमावकंघठकास्यं वरुधनंकाकुधनलपाडाकडागुमूडा आडाद्वयनिखनंमनमूकिधकसियाडाहिनकंधलनपाडाः
 निरुन॥ आममूडारुयिगथिं गुधलसा प्रक्षपायस्वपुनंजिमषुदयावेगहयाडासुखआनन्दनधनलपाडाआनगु॥ ॥
 ॐ निसयन॥ ॥थनयचमरिधेकरुलसा घधममयलहियक॥ अथलाहियेकरुलसाघधममयमविष्यं अथला
 रिधेकरुयय॥ ॥लावना॥ उंसावगुडायादि॥ ॥थनखज पागेविय॥ वाक्क॥ उंहनं२मात्रय२मर्वगकूनहान
 खलनरुद॥ ॥येकहानलगावाकं दहियप्रवमुकम॥ हसियायनि आमखज पागेरुयुगथिं गुधलसा हाहाहा
 ननंरुडाधन अरुप्रहाननंउत्यहिरुयाआनगु॥ ॥अविद्याननिहिय हानं पाका रुवामिहं॥ हसियायनि उंरुनग

अथलसा अहानहानां अविद्यान सकलं मायकाडा म हानमइदिनाआनगु थथिं गुहानं सरुकरुयाडाआनगु थथिगुखजः
 यापुतावरुनं॥ ॥पुनलावना॥ उंममिदि। की कात्रयत्रिनमांरु वृपं हानसल्लिन्नं मिष्यवउमिहात्मकं विविथभा
 ॥अरिधेकं महावजं नैधरुकं नमरुनं दयामिसर्ववुडानां के गु कालयमंरुव॥ नजायंख अरिधेकं लाहादिमयं खजः
 दकिशहसुदत्ता॥ हसियायनि आमखज अरिधेकरुयुगथिं गुधलसा नस्वपुहयाडाआन थथिगुखज लाहाकनडा नाअधन
 लपायापुतावन थआमकमकलं नामयायुगुरुल॥ ॥उंहनं२मात्रय२मर्वगकूनहानंखल्लं रुद॥ ॐ निखअरिधेक
 ॥ ॥नजायंया अरिधेक॥ पुहापावमिमायुं पागमस्यकददस्वम्य जनपा फनमर्वकयागस्यामरुदुमं॥ हसियायनि

आसपास इयु गथिगुधालसापुसुपात्रमिहासवृषइयाअरुडाधनसखइयाडाधानधथिंगुपासासिधककायागुयापुगावनसक
 लविघ्ननासयायइयुगु रुडाधनआगनउत्थलिइयाडाधानगुधककयनिस्यनसिद्धन॥ ॥सावना॥उंखंखजैडा
 माघमिद्धिपुयंइानसलोहिनपाभाकभाघमिद्धिपुयंविनाय॥ ॥नासादिमयंपागंनस्यरुहनिहमठवासह
 रुदत्तापुर्ववदसिधियंय॥हसिधपनिआसनामादिमयपागंरुयुगथिंगुधालसागर्जनीधयवडासमानइयाडाधन
 नाधानगुवजगथिविनाडाकयागुपागखडालाहाननआनायापुगावगथधालसाविघ्नमालसकल्यहवनयायगु॥ह
 सिधपनिज्ञापायानथगगपनिस्यंगथवृषपुनपनिरुअरिधकविनआडाथनिहपनिस्यंगथवृषपुनपनिरुअरिधकविन

न॥ ॥उंरुहमर्वइयानपागयश्च२सखकधर्मकम्माहा॥ ॥थनमिधयनिरुअवलयामडाकास्यंखजपागआनक॥ ॥
 उंरुलानसाइनाभाघमिद्धिस्वगावा॥रुमिपागमिधक॥ ॥थनमिसाहकासुगावनाकय॥उंसिधयधुमहावाघधम
 गुलापुविमगकावधमात्रयउंरुपीरुगावनरुववसिद्धिचंरुह॥ ॥थनमिसाहकासुकरिकपालाविधकविय॥
 ॥लाहादिकरिकाकम्मादकिंहाहसुदद्यान॥हसिधपनिआसवजडासमानइयाडाधानगुकरिंतमसकमालसकल्य
 हवनयायजियाडाधानगुकरिकाविधकजिनकपनिरुविया॥ ॥करिविय॥उंकरिसर्वमागानांकरुय२रुह॥
 ॥थनपागविधकविय॥उंवजकपालसर्वसकुनांरुधाय२रुह॥ ॥वासहककावदद्यान॥रुमिकरिकपाला

